हिंदी समाचार-पत्र और शिक्षा

राजपाल सिंह यादव*

हिंदी समाचार-पत्रों का एक लंबा इतिहास रहा है। जहाँ यह शुरुआत में केवल खबरों के लिए प्रकाशित किया जाता था, आज वह केवल खबरों तक सीमित न रहकर हमारे लिए आलोचक, मार्गदर्शक, अन्वेषक आदि रूपों में सक्रिय है। ऐसी स्थिति में यदि इसका प्रयोग शिक्षा हेतु किया जाए तो इससे विद्यार्थी अत्यधिक लाभांवित हो सकेंगे। आज शिक्षा को केवल किताबों तक समेट देने से काम नहीं चल सकता। इसी बात को ध्यान में रखते हुए शिक्षा में समाचार-पत्रों को एक शिक्षण साम्रगी के रूप में प्रयोग करके देखना चाहिए। संभावना है कि इससे शिक्षा के कुछ सकारात्मक पहलू निकल कर आएँ, जो विद्यार्थियों के विकास में बहुमूल्य साबित हो सकेंगे। समाचार-पत्र एक ऐसी सामग्री है, जिसे पढ़ने के लिए न तो परीक्षाओं का डर होता है और न ही किसी और तरह के मूल्यांकन का, न ही इसके लिए कोई निर्धारित पाठ्यक्रम होता है। इस अर्थ में यह एक ऐसी शिक्षा हो सकती है जो विद्यार्थियों को कक्षा की दीवारों से बाहर की दुनिया से जोड़ सकेगी। यह लेख प्रस्तुत करता है कि किस प्रकार शिक्षक, शिक्षार्थी तथा समुचित शिक्षा व्यवस्था के लिए समाचार-पत्र कितनी महत्वपूर्ण भूमिका अदा करते हैं। यह लेख शिक्षण-विधियों में समाचार-पत्र के प्रभाव को देखने का प्रयास करता है। समाचार-पत्र विद्यार्थियों के ज्ञान के व्यापक स्रोत के रूप में, आलोचनात्मक चिंतन के विकास में, भाषा विकास में, पर्यावरण के प्रति जागरूकता में, खेलकूद, राष्ट्रीय भावना, सामान्य ज्ञान की वृद्धि आदि में योगदान दे सकते हैं।

अब समाचार-पत्र केवल समाचारों के सूचक ही नहीं रह गए हैं, बल्कि आलोचक, मार्गदर्शक, अन्वेषक आदि अनेक रूपों में वे समाज में सक्रिय हैं। भाषा का जो स्वरूप समाचार-पत्रों के पठन-पाठन और वाचन द्वारा समाज के हर वर्ग तक पहुँचता है, उससे भाषा के निर्माण में प्रमुख और लोक-रुचि के निर्माण में बहुत सहायता मिलती है। कुछ विद्वानों का यह मानना है कि समाचार-पत्र प्रचलित भाषा के लिखित स्वरूप का मानकीकरण करते हैं। समाचार-पत्र शिक्षा के विविध आयामों से जुड़े हुए हैं। समाचार-पत्र एक शिक्षण सामग्री के रूप में भी प्रयोग किए जा सकते हैं। प्रस्तुत लेख में शिक्षा के विभिन्न आयामों को लिया गया है, जैसे—समाचार-पत्र ज्ञान के स्रोत का एक उचित संसाधन हो सकता है। समाचार-पत्र विद्यार्थियों की आलोचनात्मक चिंतन क्षमता के विकास में सहायक हो सकता है। इसी तरह समाचार-पत्र

* *शोधार्थी,* केंद्रीय शिक्षा संस्थान, शिक्षा विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली 110007

बालक की भाषा के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। बच्चे के सामान्य ज्ञान की वृद्धि के लिए भी समाचार-पत्र एक महत्वपूर्ण और व्यापक स्रोत हो सकता है।

जॉन डीवी के अनुसार, विद्यालय समाज का लघु रूप होता है। कोई भी शिक्षा व्यवस्था वस्तुतः अपने समाज की उपव्यवस्था मानी जाती है। समाज में जो कुछ घट रहा है, शिक्षा-व्यवस्था उसी का प्रतिबिंबन करती है। समाचार-पत्रों की भूमिका इस मामले में महत्वपूर्ण है कि वे किस प्रकार समाज को, उसकी संपूर्णता में दिखाने का प्रयास करते हैं। इस तरह से शिक्षा व्यवस्था से समाचार-पत्रों का संबंध अपने आप जुड़ जाता है, क्योंकि दोनों का संबंध सामाजिक व्यवस्था से होता है।

एक हिंदी अध्यापक के रूप में शोधार्थी ने यह पाया कि जिस तरह से अंग्रेज़ी समाचार-पत्रों में विद्यार्थियों के लिए विशेष संस्करण प्रकाशित होते हैं, ऐसी स्थिति हिंदी-समाचार पत्रों में नहीं पाई गई। हिंदी समाचार-पत्र बहुत अधिक प्रचलन में हैं। समूची हिंदी भाषी क्षेत्र का पाठक अपनी भाषा में समाचार-पत्र पढ़ना चाहता है। बावजूद इसके माध्यमिक स्तर तक के विद्यार्थियों के लिए समाचार-पत्र अपनी ऐसी कोई भूमिका नहीं निभा पाते हैं जिससे उनका सीधा फ़ायदा विद्यार्थियों की शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया में मिले। इस संदर्भ में प्रस्तुत शोध लेख में समाचार-पत्र और शिक्षा के संदर्भ में समाचार-पत्रों की भूमिका का आलोचनात्मक विश्लेषण करने का प्रयास किया गया है। ज्ञान के स्रोत के रूप में समाचार-पत्र एक ऐसे व्यापक संसाधन के रूप में प्रयुक्त किए जा सकते हैं, जो विद्यार्थियों के ज्ञान के निर्माण में सहायता देते हैं। समाचार-पत्रों की भूमिका पाठ्यपुस्तकों के साथ-साथ इसलिए महत्वपूर्ण होती है, क्योंकि पाठ्यपुस्तकें पाठ्यक्रम के अनुसार ज्ञान देती हैं, जबकि समाचार-पत्र ज्ञान के व्यापक रूप को धारण किए होते हैं, साथ ही यह सामाजिक, राजनीतिक व आर्थिक सूचनाएँ भी विद्यार्थियों को देते हैं और खेलकूद एवं नवीन खोजों से संबंधित गतिविधियों तथा समाज में घट रही घटनाओं की जानकारी भी देते हैं। इसलिए समाचार-पत्र, पाठ्यपुस्तकों के साथ-साथ एक ऐसी शिक्षण सामग्री के रूप में काम आते हैं जिनका प्रयोग एक व्यापक संसाधन के रूप में विद्यालयी व्यवस्था में किया जा सकता है। समाचार-पत्रों में ज्ञान व्यापक रूप में मौजूद होता है। यह ऐसी सामग्री है, जो विद्यार्थियों में नवीन ज्ञान के निर्माण के लिए रुचिकर भी होती है और पठनीय भी।

ज्ञान के व्यापक स्रोत के रूप में समाचार-पत्रों की भूमिका

समाचार-पत्र ऐसी सामग्री है जिसे पढ़ने के लिए न तो परीक्षाओं का डर होता है, न किसी और तरीके के मूल्यांकन का, न ही इसका कोई निर्धारित पाठ्यक्रम होता है। यह ऐसी शिक्षा का साधन है, जो विद्यार्थियों को बाहरी दुनिया से जोड़ती है। इन समाचार-पत्रों का प्रयोग कक्षा में कैसे किया जा सकता है? यह एक महत्वपूर्ण प्रश्न है। इन समाचार-पत्रों का विद्यार्थियों के लिए कैसे उपयोग किया जाए इसके लिए शिक्षकों के पास कोई दिशा-निर्देश नहीं होते। इसलिए अकसर समाचार-पत्र विद्यालयों की लाइब्रेरी में रखे रहते हैं, या फिर जब खाली समय हो तब पढ़ लिए जाते हैं।

अध्यापक विद्यार्थियों के ज्ञान का विस्तार करने के लिए समाचार-पत्रों का प्रयोग दो-तीन तरह से कर सकता है। जब वह सामाजिक विज्ञान पढ़ाता है तब जैसे— राजनीतिक दलों का मुद्दा, चुनाव, संविधान आदि हो तो ऐसी विषय-वस्तु को पढ़ाने के लिए शिक्षक समाचार-पत्रों से घटनाएँ ले सकते हैं। इसके दो फ़ायदे होंगे। पहला, विद्यार्थी आजकल घटने वाली घटनाओं से परिचित हो जाएगा। दूसरा, समाचार-पत्रों में वर्णित इन घटनाओं से जुड़े अपनी पाठ्यपुस्तक के कुछ प्रकरणों को भी समझ लेगा। सामाजिक विज्ञान में जितने भी विषय हैं, चाहे वह अर्थशास्त्र हो, राजनीतिशास्त्र, इतिहास या भूगोल, प्रत्येक विषय समाज से किसी न किसी रूप में जुड़ा हुआ है। प्रत्येक विषय का वर्णन समाचार-पत्रों में किसी न किसी रूप में होता है। इस तरह से हम देखेंगे कि सामाजिक विज्ञान की ज़्यादातर विषय-वस्तु समाचार-पत्र में प्रकाशित होने वाली खबरों से किसी न किसी रूप में जुड़ जाएगी। अध्यापक एक-दूसरे तरीके से भी समाचार-पत्र का प्रयोग शैक्षणिक सामग्री के रूप में कर सकता है। वह चाहे तो समाचार-पत्रों में छपी किसी विशेष खबर पर चर्चा करवा सकता है, उस पर विद्यार्थियों से कोई गतिविधि करवा सकता है। इस तरह से समाचार-पत्र के माध्यम से अध्यापक कुछ ऐसे कार्य करवा सकता है जो विद्यार्थियों में सामाजिक जागरूकता तो उत्पन्न करेंगे ही, साथ ही पाठ्यक्रम में वर्णित विषय-वस्तु को समझने में भी सहायक होंगे। इसलिए निस्संदेह ज्ञान के व्यापक स्रोत के रूप में समाचार-पत्र अपनी भूमिका निभा सकते हैं। बस ज़रूरत अध्यापक द्वारा समाचार-पत्रों का उचित प्रयोग करने की है।

आलोचनात्मक चिंतन के विकास में समाचार-पत्रों की भूमिका

शिक्षा का एक दूसरा आयाम भी समाचार-पत्रों से जुड़ता है, यह दूसरा आयाम है — आलोचनात्मक चिंतन क्षमता का विकास। समाचार-पत्र विद्यार्थियों में चिंतन क्षमता के विकास में सहायक हो सकते हैं। समाचार-पत्र किसी सामाजिक घटना के बारे में कई तरह की राय एक साथ प्रस्तुत करते हैं। इसलिए विद्यार्थियों के सामने यह एक विश्लेषणात्मक दृष्टिकोण के रूप में सामने आता है। एक मुद्दे पर विद्यार्थियों के सामने कई तरह की राय उपस्थित रहती है। अब एक मुद्दे पर कई तरह से सोचने के अवसर उनके सामने होते हैं। पाठ्यपुस्तक जहाँ एक विशेष दृष्टिकोण एवं कुछ निर्धारित सिद्धांतों को लेकर चल रही है, वहीं समाचार-पत्र उन सिद्धांतों के पार जाकर कई तरह के दृष्टिकोण को सामने रखकर विश्लेषण करते हैं। यहाँ भी अध्यापक की भूमिका महत्वपूर्ण हो जाती है। अध्यापक को विद्यार्थियों को यह मौका देना चाहिए कि वे समाचार-पत्रों के संपादकीय खंड का प्रयोग कर विभिन्न दृष्टिकोणों के आधार पर खुले दिमाग से विचार करें। यह ज़रूरी नहीं है कि समाचार-पत्रों ने लिखा है, विद्यार्थी उसी मत को माने, बल्कि विद्यार्थी उस घटना या खबर के बारे में अपना स्वयं का मत भी बना सकते हैं, यही एक तरह का आलोचनात्मक चिंतन है। आलोचनात्मक चिंतन वर्तमान समय में शिक्षण-प्रक्रिया में बेहद महत्वपूर्ण माना जाता है। शिक्षा की नवीन विचारधारा विद्यार्थियों में ऐसे चिंतन के विकास पर ज़ोर देती है, जिसमें विद्यार्थी सही व गलत का निर्णय भी

कर पाएँ। साथ ही वह किसी समस्या के बहुआयामी पक्षों को भी समझ पाएँ। वे समस्या के प्रत्येक पहलू का अध्ययन कर विभिन्न दृष्टिकोणों के आधार पर उसका विश्लेषण कर पाएँ।

शिक्षा का उद्देश्य बच्चों को समाज का उपयोगी, ज़िम्मेदार एवं उत्तरदायी नागरिक बनाना है। विद्यालयों में विद्यार्थी अनुभव द्वारा सीखते हैं। कक्षा में विद्यार्थी अपने अनुभवों का मूल्यांकन एवं विश्लेषण कर सकते हैं। अपनी शंकाओं को दूर कर सकते हैं, खोज के लिए प्रश्न पूछ सकते हैं तथा स्वतंत्रतापूर्वक सोच सकते हैं। विद्यार्थियों की प्रकृति के अनुसार कक्षा में अभ्यास को निर्देशित किया जा सकता है। ऐसे विकासात्मक सिद्धांत बनाएँ, जो बच्चों की प्राकृतिक एवं सामाजिक सोच के बारे में हो तथा यह सोच उनके स्वयं के बारे में तथा दूसरों के संबंधों के बारे में हो। जिससे विद्यार्थी 'कारण-प्रभाव संबंध' को समझ सकेंगे।

भाषा विकास में समाचार-पत्रों की भूमिका

शिक्षा का तीसरा आयाम है — समाचार-पत्र और भाषा। समाचार-पत्र और पत्रिकाएँ भाषा व्यवहार को बढ़ाने वाले सबसे महत्वपूर्ण उपकरण हैं। समाचार-पत्र एक ऐसा साधन है जो न केवल भाषा सिखाता है, बल्कि भाषा को समृद्ध भी करता है। समाचार-पत्र में नवीन शब्दावली का प्रयोग होता है। इस शब्दावली को विद्यार्थी सीख सकते हैं। संदर्भ के अनुसार उनका प्रयोग कर सकते हैं। समाचार-पत्र क्षेत्रीय ही नहीं होते, बल्कि राष्ट्रीय तथा अंतर्राष्ट्रीय घटनाओं को भी स्थान देते हैं। उनकी विषय-वस्तु का दायरा बड़ा व्यापक होता है। इसलिए समाचार-पत्र में जितनी तरह की शब्दावली का प्रयोग मिलता है, ऐसा भाषा प्रयोग और कहीं देखने को नहीं मिलता। अगर विद्यार्थी लगातार समाचार-पत्र के संपर्क में रहते हैं तो नयी शब्दावली पर उनका अधिकार हो जाता है। जैसा सर्वविदित है कि जिस व्यक्ति के पास जितने अधिक शब्द होते हैं, वह भाषा के मामले में उतना ज़्यादा समृद्ध होता है। इसलिए बच्चे की भाषिक क्षमता को बढ़ाने में समाचार-पत्र अपना अप्रतिम योगदान दे सकते हैं। नित नवीन शब्दों के साथ-साथ शब्दों के प्रयोग को भी समाचार-पत्र बढ़ावा देते हैं।

यद्यपि, भाषा के प्रयोग के मामले में समाचार-पत्रों में कुछ कमियाँ भी दिखाई देती हैं। एक हिंदी का अध्यापक सतत एवं समग्र मूल्यांकन के अंतर्गत अपठित सामग्री का पठन विद्यार्थियों द्वारा कराता है। इस हेतु एक बार लेखक अपनी कक्षा में समाचार-पत्र लेकर गया। वहाँ उन्होंने विद्यार्थियों से समाचार-पत्र पढ़ने के लिए कहा। यह पाँचवी कक्षा थी, तो विद्यार्थियों को समाचार-पत्र पढ़ने में काफ़ी दिक्कत हो रही थी। तब उन्होंने महसूस किया कि समाचार-पत्र में जो शब्द हैं, वह शब्द विद्यार्थियों की उम्र के हिसाब से जटिल थे, अर्थात् वह समाचार-पत्र विद्यार्थियों के लिए नहीं था। फिर वे समाचार-पत्र को देखने लगे कि कोई ऐसा पृष्ठ हो जिसमें विद्यार्थियों की उम्र के हिसाब से भाषा लिखी गई हो जिससे वे विद्यार्थियों का पठन कौशल जाँच सकें। लेकिन उन्हें कोई भी पृष्ठ नहीं मिला। तो उन्होंने खुद से सवाल किया कि आखिर ऐसा क्यों है? अंग्रेज़ी के कुछ समाचार-पत्र विद्यार्थियों के लिए अलग संस्करण निकालते हैं, तो हिंदी के

समाचार-पत्र क्यों नहीं निकालते? यह सवाल उनके ज़ेहन में उठा। इसके अलावा, दूसरी बात यह है कि वे हिंदी का समाचार-पत्र लगातार पढ़ते हैं तो उसमें देखते हैं कि अनुस्वार और अनुनासिक के स्थान पर केवल अनुस्वार का प्रयोग किया जाता है। वे अपनी कक्षा में विद्यार्थियों को अनुस्वार और अनुनासिक पढ़ाते हैं। साथ ही वे विद्यार्थियों को समाचार-पत्र पढ़ने के लिए भी प्रेरित करते हैं, तो उन्हें लगा, यदि विद्यार्थी समाचार-पत्र को पढ़ेंगे तो वह गलत शब्द सीखेंगे। अनुस्वार लगाना तो सीख जाएँगे, लेकिन अनुनासिक का प्रयोग शब्दों में नहीं कर पाएँगे या फिर गलत स्थान पर करेंगे। तीसरी बात, समाचार-पत्र पढ़ते हुए उन्होंने महसूस किया कि अंग्रेज़ी के शब्दों का आजकल समाचार-पत्रों में बहुतायत में प्रयोग किया जा रहा है तो उन्हें लगा कि ऐसा क्यों हो रहा है? लेखक को हिंदी के समाचार-पत्रों में रोमन भाषा का प्रयोग कुछ ज़्यादा ही अखरता था। उसके पश्चात् भी समाचार-पत्र अंग्रेज़ी शब्द का प्रयोग कर रहे हैं, तो यह सवाल लेखक को अंदर तक आंदोलित करता है। हिंदी समाचार-पत्रों में अधिकतर अंग्रेज़ी शब्द अनावश्यक रूप से भरे जाते हैं। हिंदी पूर्णतः अंग्रेज़ी आश्रित हो रही है। हिंदी पर जबरन अंग्रेज़ी लादे रहने से हिंदी का विकास अवरुद्ध हो जाता है। हिंदी में नए शब्द बनाना तो दूर, हिंदी के सुप्रचलित शब्द भी प्रयोग से हटते जा रहे हैं। आज हिंदी में अनावश्यक रूप से अंग्रेज़ी शब्दों का प्रयोग भले ही फ़ैशन के तौर पर किया जा रहा हो, लेकिन यह हमारी मजबूरी बन जाती है और हम अंग्रेज़ी शब्दों के बिना खुद को असहाय महसूस करने लगे हैं।

शब्दों और वाक्यों के संक्षिप्त रूपों के कारण भाषा के रूप में भी परिवर्तन होता है। आजकल देखने में आता है कि समाचार-पत्रों में खबरें कुछ ज़्यादा ही बढ़ गई हैं। समाचार-पत्रों की पृष्ठ संख्या पहले से ही निर्धारित रहती है। वह प्रतिदिन नहीं बदलती पर प्रकाशित होने वाली सामग्री का ज़्यादा हो जाने के कारण संपादकों को संक्षिप्त शब्दावली का प्रयोग करना पड़ता है। इससे भाषा के रूप में परिवर्तन हो जाता है।

पर्यावरण के प्रति जागरूकता में समाचार-पत्रों की भूमिका

समाचार-पत्रों में पर्यावरण पर बहुत से लेख प्रकाशित होते हैं। जिसके कारण आज हमारे विद्यार्थी अपने पर्यावरण के प्रति सजग हो रहे हैं। उन्हें पता होता है कि कौन-सा कार्य हमारे पर्यावरण के लिए उचित है और कौन-सा अनुचित। आज विद्यार्थी बिजली, पानी, कागज़ आदि के सदुपयोगों पर चर्चा करते हैं। वे साफ़-सफ़ाई का ध्यान भी रखते हैं।

सामान्य ज्ञान की वृद्धि में समाचार-पत्रों की भूमिका

समाचार-पत्र पढ़ने से विद्यार्थियों को खेलकूदों के बारे में पता चलता है। इनसे विद्यार्थियों को विभिन्न प्रकार के पुरस्कारों की जानकारी प्राप्त होती है। इन समाचार-पत्र को पढ़कर ही वे अनेक पर्यटन स्थलों से परिचित होते हैं। अलग-अलग विधा की हस्तियों के बारे में प्रकाशित लेखों को पढ़कर वे प्रेरणा ग्रहण कर आगे बढ़ने को ललायित होते हैं।

शिक्षा की परंपरागत विधियों से अलग अब नवीन विधियों पर ज़ोर दिया जाना चाहिए। हम उपरोक्त उदाहरणों द्वारा देख सकते हैं कि शिक्षा के माध्यम के रूप में समाचार-पत्र भी महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं। इस प्रकार, हम समझ सकते हैं कि शिक्षक-शिक्षार्थी तथा समूची शिक्षा व्यवस्था के लिए समाचार-पत्र कितनी महत्वपूर्ण भूमिका अदा करते हैं। इसके लिए उचित होगा कि हम समाचार पत्रों को शिक्षा व्यवस्था में पर्याप्त स्थान दे पाएँ। हम विश्वसनीय समाचारों को लेकर कक्षा में विद्यार्थियों के बीच समूह चर्चा करा सकते हैं। इस समूह चर्चा से उत्पन्न होने वाली जागरूकता, कक्षा की दीवारों को लांघकर बाहर तक जाती है। विद्यार्थी उन्हें अपने जीवन में उतारते हैं तथा अपने चारों ओर के लोगों को प्रभावित करते हैं।

इस तरह शिक्षा के माध्यम के रूप में समाचार-पत्र एक ऐसा साधन हो सकता है जिसकी लागत तो बहुत कम है, पर प्रभावशीलता अतुलनीय है।